Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-1, June 2019
Impact Factor: 4.081
www.researchguru.net

दिव्य दैहिकता की अवधारणा देवदासी

अमित कुमार झा

UGC-Net समाजशास्त्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,

Email -amitjha9648@gmail.com

सरांशिका - भारतीय समाज के संचालन में धर्म की विशेष भूमिका रही है जिसके कारण यह समाज के सभी किया कलापों को कमोबेश प्रभावित करती रही है | मंदिरों की समुचित देखभाल में जहाँ पुजारी एवं अन्य व्यक्ति तो सहयोग करते ही थे इन्ही के एक अन्य नाम भी था वो था देवदासी का | मंदिरों में परिवार द्वारा कुँवारी लड़कियों को उनकी इच्छा की पूर्ति होने पर समर्पित कर दिया जाता था | यह प्रथा सम्पूर्ण भारत में पाया जाता था ,परन्तु दक्षिण भारत इसका मुख्य केंद्र रहा है | इस प्रथा का व्यापक उल्लेख शास्त्रों एवं अभिलेखों में मिलता रहा है | देवदासी अपने प्रारम्भिक काल में मंदिरों के पूजा -अर्चना से सम्बंधित कार्यों में सहयोग देती थी | वही समय के विकास के साथ इस प्रथा के नैतिक पक्षों में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित होने लगे | इस प्रथा के आड़ में देवदासियों का व्यापक पैमाने पर यौन शोषण होने लगा | वे अपने आजीविका के लिये वेश्यावृत्ति जैसे घृणित कार्यों को करने लगी जो उनकी दिव्यता की अवधारण को धीरे -धीरे कलंकित करने लगी |

मुख्य शब्द - देवदासी, वेश्यावृत्ति, अभिलेख |

प्रस्तावना - भारतीय समाज के विकास यात्रा को को विहंगम दृष्टि से अवलोकित करे तो हमें यह दृष्टिगोचर होता है की भारतीय समाज में धर्म का विशेष स्थान है | धार्मिक व्यवस्था ने भारतीय समाज के विविध आयाम को प्रभावित किया है इसी धार्मिक व्यवस्था के इर्द - गिर्द समाज में व्यक्ति के क्रियाकलाप का निर्माण होता था | उसके प्रत्येक क्रिया - कलाप के पीछे धार्मिकता की भावना निहित रहती है | इस धर्मिक क्रिया - कलाप के पीछे समाज के सभी तबके का कल्याण निहित था प्रत्येक व्यक्ति को समाज में उसका यथोचित स्थान देने का प्रयास किया गया जिसका वो योग्य था , परन्तु समय के साथ इस धार्मिक व्यवस्था में अनेक कुरूतियों का जन्म हुआ जो एक सभ्य समाज के लिए खतरा बना | धार्मिक ग्रंथो में जहा स्त्री का महिमा मंडन किया गया था वही उनके साथ उसी धर्म की आड़ में उनकी अस्मिता की निर्मम हत्या की गयी |ऐसी ही एक प्रथा देवदासी प्रथा थी जिसके प्रारंभ में उसे बहुत सम्मना एवं पवित्रता के साथ देखा जाता था परन्तु बिगत काल खंड में यह देवदासी से एक वेश्या के रूप में समाज में जाने जाना लगा उन्हें मजबूरन वेश्यावृत्ति की धंधा में भेजा गया |

महत्वपूर्ण स्त्रोत- समय के साथ - साथ देवदासी प्रथा भारतीय समाज में अपनी गहरी पकड़ बनाने लगी| भारतीय समाज को जानने का एक प्रमुख परिप्रेक्ष्य भारतीय विद्या अधिगम परिप्रेक्ष्य है जो भारतीय समाज को उसके वांग्मय से जानने और समझने का प्रयास करते है | जिससे भरतीय समाज के बारे में नयी अंतदृष्टि विकसित होती है | इस परिप्रेक्ष्य को विकसित करने का श्रेय जी. एस. घुरिये को जाता है | इसी परिप्रेक्ष्य के आधार पर देवदासी प्रथा के प्रारंभिक उदभव को समझने का प्रयास करे तो हमें व्यापक लेखन उपलब्ध होते है |जिसमें से कुछ महत्वपूर्ण स्त्रोत निम्न है –

कालिदास के मेघदूतम में मंदिरों में नृत्य करने वाली आजीवन कुमारी कन्याओं का वर्णन मिलता है जो संभवत: देवदासियां ही रही होगी |मत्स्य पुराण , विष्णु पुराण तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र

में भी इसका वर्णन मिलता है | प्रसिद्ध इतिहासकार विश्वनाथ राजवाड़े के महत्वपूर्ण ग्रंथ "भारतीय विवाह का इतिहास " देवराज चानना की पुस्तक" स्लेवरी इन एशियन्ट इण्डिया" एस. एन. सिन्हा और एन. के. बसु की पुस्तक "हिस्ट्री ऑफ़ प्रॉस्टीटूशन इन इंडिया" एफ. ए. मार्गलीन की पुस्तक वाइव्ज ऑफ़ द किंग गॉड,रिचुअल्स ऑफ़ देवदासी , मोतीचन्द्रा की स्टडीज इन द कल्ट ऑफ़ मदर गॉडेस इन एशियन्ट इण्डिया , वी. डी. सात्सोकर की हिस्ट्री ऑफ़ देवदासी सिस्टम. कैथरीन रुबिन केरमोगांत की सर्वेन्ट्स ऑफ़ द गॉडेस. काकोली चक्रबोर्ती की वुमन एज देवदासी, जेम्स फ्रेजर की गोल्डन बो जैसे पुस्तकों में समाजशास्त्री, इतिहासकार एवं चिंतकों ने व्यपाक फलक देवदासी प्रथा के बारे में लिखने का प्रयास किया है |

कल्हण की राजतरंगिणी, कुट्टनीमत्तम और कथासरितसागर में भी देवदासी शब्द का प्रयोग मिलता है| रितेश शर्मा की एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'द होली वाइव्स' से भी इस पर व्यपाक रूप से प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है| अरुण इजूथाचन की मलयालम में लिखी पुस्तक विसुधा पापनगालूदे इण्डिया (भारत पवित्र पापों की भूमि) में भी इन्होने देवदासी प्रथा के बारे में लिखने का प्रयास किया है |

देवदासियों के विभिन्न नाम - भारत में सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विविधताओं के कारण देवदासी को कई नामों से जाना जाता है जैसे तावतासी, तेवारतियार, पतियालर, तलिकिसरी पेंडुकल, तेवनार मकल, कोट्टिकल , अतिकलमार, मणिककटर, काणिकैयार [i], एम्परुमनतियार और कोयिल पिनक्कल में कई नामों से दर्शाया गया था [2]| तमिलनाडु में तेविडीची , नंगौरमार [3] कुदिकारी, मुरिक्कारी , कुट्टाची , कुथिची और अटककारी [4] | कर्णाटक में सुलेर या सुले , पोटी| केरल में बसवी और जोगती| आंध्र प्रदेश में सनिस और भोगम[5] | असम में कुरमपस और कुदिपस| कोंकणी में भाविन और कलावंत | [6][i]

देवदासी यानि सर्वेंट ऑफ़ गॉड[7] |देवदासी बनने का मतलब होता था भगवान या देव की शरण में चले जाना | उन्हें भगवान की पत्नी समझा जाता था| इसके बाद वे किसी जीवित इंसान से शादी नहीं कर सकती थी |

प्रियदर्शिनी विजयश्री ने देवदासी के लिये धार्मिक वेश्या शब्द का प्रयोग किया है वो कहती है दरअसल देवदासी शब्द इन स्त्रियों की वास्तविकता या मूल अस्मिता की पर्दापोशी करता है , जबकि धार्मिक वेश्यावृत्ति में यह बची रहती है | औपनिवेशिक अवधि के दौरान है संस्कृतनिष्ठ शब्द देवदासी चलन ने जोर पकड़ा | इसे उन बुध्दिजीवियों ने उछाला जो एक निर्णायक ऐतिहासिक घड़ी में अपने सचेत सुधारवादी कार्यक्रम के तहत मंदिर की वेश्याओं की अस्मिता की पुनर्रचना में जुटे हुए थे | धार्मिक वेश्यावृत्ति उस धर्मिक मान्यता का दृष्टान्त है जो 'सेक्स को आध्यात्मिक मिलन और सम्भोग को मोक्ष का मार्ग ' मानती है |[8]

देवदासी प्रथा का इतिहास - देवदासी शब्द प्रथम प्रयोग कौटिल्य कि अर्थशास्त्र में मिलता है | डॉ अल्तेकर ने देवदासी प्रथा का प्रारंभ तीसरी ई शती में माना है | कालिदास ने मेघदूत में उज्जैन कि महा काल मंदिर में देवदासियों का उल्लेख किया है | मत्स्य पुराण एवं विष्णु पुराणों में भी देवदासियों का उल्लेख मिलता है |जब इस प्रथा का चलन बहुत बढ़ गया तब अभिलेखों में इसका वर्णन किया जाने लगा | वर्मलाट के बसंतगढ़ अभिलेख (६२४ ईस्वी) में श्रीमाता मंदिर की देवदासी का उल्लेख है | मंदिरों में में एक से अधिक देवदासियां भी रखी जाती थी | इनकी संख्या कभी - कभी सौ के उपर भी हो जाया करती थी| जिसका परिणाम विजय सेन की देवपारा प्रशस्ति है | ह्वेनसांग ने मुल्तान के सूर्य मंदिर के देवदासियों का वर्णन किया है | राजस्थान के हर्षनाथ मंदिर में अनेक देवदासियां थी | सौराष्ट्र के सोमनाथ मंदिर में ५०० देवदासियां थी | जो अपने नृत्य द्वारा देवताओं को प्रसन्न करने के लिये सदैव तत्पर रहती थी[9] | नृत्य का सम्बन्ध धर्म से जुड़ा था उसे देवताओं को प्रसन्न करने का साधन माना जाता था | इसलिये

मंदिरों में देवदासी रखने की प्रथा थी | मुग़लकाल में जब राजाओं ने यह महसूस किया कि इतनी संख्यां में देवदासियों का पालन - पोषण करना उसके वश में नहीं है , तो देवदासियां सार्वजनिक संम्पति बन गई |

देवदासी प्रथा के प्रारम्भिक दौर में जो देवदासियां बनती थी वो वह उच्च जाती की होती थी | वे पढ़ी लिखी विदुषी होती थी | वह नृत्य संगीत के अलावा अन्य गुणों में भी संपन्न होती थी | वह खुद को मंदिर में समर्पित कर आजीवन उस ईश्वर के प्रति निष्ठावान होकर सेवा करती थी | वह मंदिर में देवता के भोग -राग के अलावा अन्य कामों को भी करती थी | वह भगवान को प्रसन्न करने के लिये गायन एवं नृत्य भी करती थी | जिससे दक्षिण भारत में नृत्य की एक अलग शैली का विकास हुआ | जिस नृत्य को भरतनाट्यम कहा जाता था | मशहूर नृत्यांगन स्वप्न सुंदरी ने देवदासी नृत्य परम्परा को आगे बढ़ाने के लिये इसे शास्त्रीय ढांचे में ढाला | इसे नाम दिया गया विलासीनीनाट्यम | दक्षिण भारत की प्रसिद्ध क्लासिकल सिंगर एम.एस.सुब्बुलक्ष्मी भी देवदासी समुदाय से आती थी | उनकी दादी एक वयनलिस्ट और मां एक वीणा वादक थी |

समय के विकास के साथ जो प्रथा एक पवित्र प्रथा थी उसमे धीरे -धीरे अनेक कुरूतियों का समावेश होने लगा और धीरे - धीरे मंदिर के प्रमुख पुजारी, सहायक पुजारियों, प्रभावशाली आधिकारियों, सामंतों एवं कुलीन अभ्यागतों के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करने लगे | देवदासी प्रथा अपने विकृत स्वरूप में आने लगा और धीरे -धीरे एक कुप्रथा के रूप में भारत के अधिकांश क्षेत्र में अपनी गहरी पकड़ बनाने लगी |

देवदासी प्रथा जब एक कुप्रथा का रूप धारण कर मंदिर - मठ महिलाओं के यौन शोषण के एक केंद्र बन गया था तो स्वेच्छा से विदुषी स्त्रियों का देवदासी के रूप में खुद को मंदिरों में समर्पित करना काम हो गया| इसी कारण कालांतर में देवदासी प्रथा के पर लोगों के बीच में अंधविश्वाश एवं डर फैला कर देवदासी बनाने का सिलसिला जारी रहा |एक तो वो देवदासियां जो अपनी इच्छा से देवदासी बनती थी| एक वो परिवार थे जो अपनी मनौती पूरा होने पर अपने घर के लड़की को देवदासी के रूप में सौप देते थे |इस सबसे इतर पुरोहित भी देवदासी का चयन करते थे |पुरोहित जिस परिवार के बच्ची का चयन देवदासी के लिए करते थे उसे यह कहा जाता था की ईश्वर की बहुत बड़ी कृपा तुम हुयी है तभी तुम्हारे परिवार को इस कार्य के लिए चुना गया है |भविष्य एवं मत्स्य पुराणों में तो यह तक लिखा है की कोई भी व्यक्ति जो अपनी कन्या को मंदिर में दान करेगा वह विष्णु लोक पहुंच जायेगा |

देवदासी के रूप अब ना सिर्फ उच्च जाति के लड़कियों को जाता था बल्कि उसके स्थान पर छोटे जाति के लड़कियों को भी चुना जाने लगा | छोटे जाति के लोग इस कार्य के लिए जल्दी इसलिए तैयार इसलिए हो जाते थे क्योकि इसके उससे उस परिवार की उस समूह में स्थिति उच्च हो जाती थी समाज में उन्हें सम्मान के दृष्टि के साथ देखा जाने लगा | इन परिवार की लड़कियाँ भी देवदासी बनने के लिए आसानी से तैयार हो जाती थी इन्हे मंदिर में सुन्दर वस्त्र और भोजन की उत्तम व्यवस्था मिलती थी | जो इन परिवार के गरीबी एवं भुखमरी से निकलने का एक साधन हो गया था |

देवदासियों के प्रकार - देवदासियों का मुख्य कार्य था मंदिर की साफ - सफाई उसका रख रखाव दीप प्रज्वलन , पवित्र ढंग से रहते हुये मंदिर के सभी आवश्यक कार्यों का निष्पादन करना | प्राचीन हिन्दू वैदिक शास्त्रों के अनुसार इन्हें ७ वर्ग में विभाजित किया गया है –

1. दत्ता - जो मंदिर में भक्ति हेतु स्वतः अर्पित हो जाती थी | इन्हें देवी का दर्जा दिया जाता था और इन्हे मंदिर के सभी मुख्य कर्म करने की अनुमति होती थी |

2. विक्रीता - जो खुद को सेवा के लिए मंदिर प्रशासन को बेच देता था, इन्हे सेवा के लिए लाया जाता था अत इनका काम साफ - सफाई आदि का होता था | ये पूजनीय नहीं होती थी | ये बस मंदिर की श्रमिक होती थी |
3. भृत्या - जो खुद के परिवार के भरण - पोषण के मंदिर में दासी का कार्य करती थी | इनका नृत्य आदि करके अपना पालन - पोषण करना होता है |
4. भक्ता- जो सेवा भाव में पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए भी मंदिर में देवदासी का कार्य करती थी ये मंदिर की समस्त कार्यों को करने लिए होती थी |
5. हृता- जिनका दूसरे राज्यों से हरण करके मंदिर को दान कर दिया जाता था | इनको मंदिर प्रशासन अपनी सुविधा अनुसार कर्म करता था | इनकी गणना तो देवदासियों में होती थी वास्तव में ये गुलाम थे |
6. अलंकार - राजा और प्रभावशाली लोग जिन कन्याओं को इसके योग्य समझते थे उसे मंदिर प्रशासन को देवदासी बनाकर देते थे | उन राजाओं और प्रभावशाली व्यक्तियों का मंदिर को दिया गया उपहार होती थी|
7. नागरी - ये मुख्यतया विधवाओं, वेश्याओं और दोषी होते थे जो बस मंदिर के शरण में आ जाते थे |

मुख्यत: दत्ता , भक्ता और अलंकार ही मंदिर की देवदासियाँ होती थी जबकि नागरी ,हृता ,बिक्रीता और भृत्या अपने स्वार्थ के लिए मंदिर से जुड़ती थी और जहाँ मुख्य देवदासियों को समाज एवं मंदिर में आने वाले दर्शनार्थी श्रध्दा और भक्ति की दृष्टि से देखते थे वही अन्य चारों को हेय की दृष्टि से देखा जाता था |ये देवदासी अपनी सभी आवश्यकता के लिए मंदिर प्रशासन पर निर्भर रहना पड़ता था | मंदिर प्रशासन ही इनके रहने खाने एवं वस्त्र का प्रबंधन करता था | मंदिर प्रशासन के आदेश पर ही मंदिर के महंत एवं अन्य व्यक्ति से यौन सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता था |कुछ ऐसी भी देवदासी का भी वर्णन मिलता है जो यौन सम्बद्ध स्थापित कर प्राप्त आमदनी का कुछ भाग मंदिर में दान देती थी |

कम उम्र के देवदासी बनने पर ३०-३५ के बाद यौवन समाप्त होने पर वह मंदिर प्रशासन के द्वारा उपेक्षा का शिकार होने लगती थी | इनकी आवश्यकता का भी मंदिर द्वारा समुचित ध्यान नहीं रखा जाता था | जिसके कारण उसे मजबूरीवश भी कभी -कभी वेश्यावृत्ति को अपनाती थी , क्योकि वह विवाह कर परिवार स्थापित नहीं कर सकती थी क्योकि उनका एक बार विवाह भगवान से हो गया होता है | इन यौन सम्बन्ध से स्थापित बच्चे के लालन-पालन की जिम्मेदारी भी देवदासीयों के समक्ष एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में उभर कर सामने आती है |आजीवन ये सिंगल मदर के रूप आजीवन सामाजिक दंश एवं उपेक्षा का सामना करते हुए अपनी जिंदगी जीने को मजबूर है |भारतीय समाज कि यह विडम्बना ही है कि जहाँ धर्म के नाम पर लोगों को भयभीत कर देवदासी बनने पर मजबूर किया जाता था | धर्म भीरु जनता इस प्रथा पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगाती थी बल्कि इसे सहर्ष स्वीकार करती थी |

पेरियार ,गाँधी जी जैसे समाज सुधारक जब इस प्रथा का विरोध कर महिला को एक गौरवपूर्ण जीने की राह में अग्रसर करना चाहते थे, तो उन्हें भी सामाजिक विरोध का सामना करना पड़ा | यह वही सभ्य समाज है जो स्त्री को देवी के रूप में स्वीकार कर मंदिर में देवदासी के पद पर सुशोभित कर धर्म के आड़ में उनका यौन शोषण करता था | उनके बच्चों को सामाजिक तिरस्कार का जीवन भर सामना करना पड़ता है | समाज के उस पुरुष वर्ग को समाज कभी भी हेय की दृष्टि से नहीं देखती है जिसके कारण उसका यौन शोषण हुआ है ,जिसके कारण सामाजिक वह सामजिक वंचना का शिकार हुयी है | मंदिर के उस महंत , पुजारी ,सामंत , धनवान श्रद्धालु पर कोई लांछन नहीं लगा , वह कोई सामाजिक वंचना का शिकार नहीं हुआ | इन सभी का शिकार तो वह महिला हुयी है जो देवता के लिए स्वेच्छा से या किसी मज़बूरी बस मंदिर में समर्पित हुयी थी |

यौन शोषण के आड़ में जो घाव उसके जिस्म पर दिए जाते थे वह सिर्फ उसके जिस्म पर नहीं होता था बल्कि उसके सम्पूर्ण अस्तित्व एवं सम्पूर्ण जीवन पर होता था | जिस्म के घाव तो वक्त के साथ भर जाते है परन्तु उसके अस्तित्व पर तो घाव लगता था वह कभी नहीं भर पता है | समाज कि उपेक्षित नजर एवं ताने हमेशा उसके घाव को हरा किये रहते है | देवदासी प्रथा कि नाम पर शोषित महिला ही सिर्फ उपेक्षा शिकार होती थी बल्कि उसकी संतान को भी आजीवन सामाजिक वंचना एवं उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है |समाज उसे हमेशा एक नाजायज संतान कि रूप में देखती है

निष्कर्ष - सरकार कि विभिन्न प्रयासों द्वारा इसे बंद करने का प्रयास किया गया है | परन्तु सरकार कि इस प्रथा पर रोक लगाने से पहले जो स्त्रियां देवदासी बन चुकी थी एवं उनके जो बच्चे थे उन्हें सरकार एवं समाज द्वारा विशेष देख भाल की आवश्यकता है | सरकार से ज्यादा उसे सामाजिक देख भाल की ज्यादा आवश्यकता है क्योकि समाज के द्वारा जो उसे बहिष्कृत कर हेय दृष्टि से देखा जा रहा है वो उनके लिए ज्यादा कष्टकर है | उसे जीवन भर उस समाज का एक अंग बनकर रहना है जो उसे उपेक्षा की नजर से देखता है | उनका सामाजिक समावेशन अत्याधिक आवश्यक है | एक स्वस्थ समाज के लिए यह आवश्यक है की देवदासी जैसे उस सभी प्रथा का विरोध किया जाये जो स्त्री को अधीनस्थ बनाकर उनका शोषण करती है उन्हें समाज के मुख्य धारा से जुड़ने वंचित रखती है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1 Sathyabama, K, 1998. Mechenzie Tamil Chuvadikal Chuttum Makkal Valviyal (unpublished Ph.D thesis). (in Tamil). Thanjavur: Tamil University. p. 204.

2 Swaminathan, A. 1992. Tamilaka Varalarum Panpadum. (in Tamil). Chennai: Deepa Pathppakam. p. 150

3 Orr, Leslie. C. 2000. Donors, Devotees and Daughters of God: Temple Women in Medieval Tamilnadu. Oxford: Oxford University Press. p. 49

4 Philip, George. March, 2005. A Historical Anatomy of the Evolution of Social Revolution in Travancore (unpublished Ph.D thesis). Kottayam: Mahatma Gandhi University. p. 66.

5 Orr, Leslie. C. 2000. Donors, Devotees and Daughters of God: Temple Women in Medieval Tamilnadu. Oxford: Oxford University Press. p. 49.

6 Cush, Denise; Catherine Robinson and Michael York. 2008. Encyclopedia of Religion. London: Routledge. p. 180

7 Saskia C. Kersenboom- Story. 1987. Nityasumangali. Delhi: Motilal Banarsidas. p. XV.

8 विजयश्री, प्रियदर्शिनी.2010. देवदासी या धार्मिक वेश्या? नयी दिल्ली: वाणी प्रकाशन. P.9

9 मिश्र, उर्मिला प्रकाश.२००२.प्राचीन भारत में नारी .मध्य प्रदेश. मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी. .पृष्ठ सं. 135-136.